1.बीरबहूटी

1. 'बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना नहीं चाहिए'- दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा?

साहिल ने पैन में नई स्याही भरवाने की इच्छा से उसमें बची स्याही को जमीन पर छिडक दिया। दुकान पहुँचने पर वहाँ स्याही नहीं थी। तब दुकानदार ने साहिल से ऐसा कहा।कहने का मतलब है-किसी वस्तु को मिलने की प्रतीक्षा में हमारे पास के वस्तु को छोडना मूर्खता है।बिना सोच विचार करके कुछ नहीं करना चाहिए।

2. जब वह उसके पास आकर बैठी उससे नजर नहीं मिला पाई। क्यों?

बेला जानती थी अपनी दिल दोस्त साहिल की नजर में वह बहुत अच्छी लडकी है। उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी। लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी। इससे उसे शरम आया। इसलिए बेला साहिल के पास आकर बैठी उससे नजर नहीं मिला पाई।

3. 'इन बच्चों को अपने चारों ओर खेलते देखकर गाँधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पडती जैसे और सयय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो।' इसका मतलब क्या है?

गाँधीजी बच्चों को बहुत प्यार करते थे। इसलिए बच्चे जब निष्कलंकता और प्यार भरी दोस्ती के साथ अपनी मूर्ति की चारों ओर खेलने लगे तो अधिक प्रसन्नता हुई होगी।

4. 'यह बारिशों से पहले की बारिश का दिन था।' कहानी के प्रसंग में यह कैसे सार्थक होता है?

हमेशा एकसाथ चलनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग हो जानेवाले हैं। इस बिछुडन के बारे में आपस में बताकर दोनों दुखी हुए और उनकी आँखें भर गयीं। यह लेखक को बारिश से पहले की बारिश लगी।

ADDITIONAL QUESTIONS

5. गणित के माटसाब छात्रों के साथ जो व्यवहार करते हैं,उसपर अपना विचार लिखें।

छात्रों से अगर कोई गलती हुई तो प्यार भरी बातें कहकर उन्हें सुधारना चाहिए। गलती सुधारने में गुस्सा करना कभी ठीक नहीं है। ऐसा करने पर उस अध्यापक के प्रति हमेशा उनके मन में भय रहेगा। यह एक अच्छे अध्यापक केलिए लायक नहीं। शरारती बच्चों को भी प्यार भरी व्यवहार करके बदलना चाहिए।

6. 'आज आखिरी बारी वे एक दूसरे की कोई चीज को छूकर देख रहे थे।' इससे आपने क्या समझा?

पाँचवीं तक एक मन से हर काम लेनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग अलग स्कूलों में भर्ती होनेवाले हैं, वे बिछुड रहे हैं। इस कारण दोनों पहले की तरह कुछ कर न पाएँगे,मिल न पाएँगे। इसलिए ऐसा कहा होगा।

7. बीरबहूटी कहानी के मुख्य पात्र कौन-कौन हैं?

साहिल और बेला

8. साहिल और बेला स्कूल केलिए घर से कुछ समय पहले निकल आते थे। क्यों?

बीरबहूटियों से मिलने केलिए

9. साहिल और बेला कब और कहाँ बीरबहूटियों को खोजते थे?

सुबह स्कूल जाते समय, कस्बे से सटे खेतों में

10. बीरबहूटियों की विशेषताएँ क्या क्या थीं?

बीरबहूटियाँ सुर्ख,मुलायम,गदबदी और धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी थीं।

11. साहिल और बेला दुकान क्यों गया?

पैन में नई स्याही भरवाने केलिए

12. पैन में बची स्याही को किसने जमीन पर छिडक दिया?

साहिल ने

13. बच्चे सुरेंदर माटसाब से क्यों डरते थे?

कॉपी जाँचते समय उसमें जरा सी गलती होने पर बच्चों को इधर उधर फेंक देते थे या झापड मारने लगते थे।

14. बेला खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी। क्यों?

साहिल के सामने माटसाब ने बेला के बालों में पंजा फँसाया था।

15. साहिल और बेला गाँधी चौक क्यों जाते हैं?

लंगडी टाँग खेलने केलिए

16. बेला क्यों अस्पताल आई है?

सिर पर पट्टी बँधवाने केलिए

17. बेला के सिर पर चोट कैसे लगी?

छत से गिर जाने के कारण

18. 'तेरे सिर में फिर से लग जाएगी तो....।' ऐसा किसने किससे कहा?

साहिल ने बेला से कहा

19. साहिल परेशान क्यों था?

खेलने से अगर बेला के सिर पर फिर से चोट लग जाएगी तो क्या करेगा।

20. साहिल को क्यों अस्पताल ले जाया गया?

उसकी पिंडली में कील लगने से हुई चोट को पट्टी बँधवाने केलिए

21. साहिल और बेला को फुलेरा का स्कूल क्यों छोडना पडता है?

क्योंकि फुलेरा का स्कूल पाँचवीं तक ही था।

22. बेला के पापा उसे किस पाठशाला में पढाना चाहते हैं?

राजकीय कन्या पाठशाला में

23. साहिल के पापा उसे कहाँ भेजकर पढाना चाहते हैं?

अजमेर

24. साहिल और बेला अब किस कक्षा में आ गए हैं?

छठी कक्षा में

25. साहिल और बेला बहुत दुखी क्यों देख रहे थे?

गाँव का स्कूल पाँचवीं तक का होने से उन्हें आगे की पढाई केलिए अलग अलग स्कूलों में पढना पडेगा।

26. बेला साहिल से नजर क्यों नहीं मिला पाई?

उसे अच्छी लडकी माननेवाले साहिल के सामने माटसाब ने बेला को अपमानित किया।

27. शर्मिंदा महसूस करना- इसका मतलब क्या है?

लज्जित होना

28. 'अब तो कल ही मिल पाएगी।' दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा?

दुकान में स्याही नहीं है।

29. बेला किसके साथ बीरबहूटियों को देखने गई?

साहिल के साथ

30. **<u>पटकथा-1 (बीरबहूटियों को खोजना)</u>**

स्थान - कस्बे से सटा खेत।

समय - सुबह 9 बजे।

पात्र - साहिल और बेला (दोनों 10-11 साल के, स्कूल की वर्दी पहने हैं)

दृश्य का विवरण - दोनों बच्चे,स्कूल में जाते समय कस्बे से सटे खेतों में बीरबहूटियों को खोजने आए हैं।

संवाद

बेला - देखो साहिल,यहाँ कितनी बीरबहूटियाँ हैं!

साहिल - हाँ, मैंने देखा। इसका रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है।

बेला - ठीक है। ये कितने सुर्ख,मुलायम और गदबदी हैं! धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी....।

साहिल - तुमने कुछ सुना बेला?

बेला - हाँ सुना,स्कूल में पहली घंटी लग गई है। जल्दी चलो, देर हो जाएगी।

साहिल - रुको,दुकान से मुझे पैन में स्याही भी भरवानी है।

बेला - तू क्या बोलता है यार? देर होकर कहीं माटसाब के आगे हो जाए तो?

साहिल - नहीं बेला,स्कूल के नजदीक के दूकान से ही भरवानी है।

बेला - तो चलो जल्दी।

(खेत की जमीन से उठकर दोनों बस्ते और वर्दी ठीक करके दुकान की ओर जाने लगते हैं।)

31. ***पटकथा-2 (पैन में स्याही भरवाने दूकान में)***

स्थान - गाँव की स्टेशनरी की दुकान।

समय - सुबह 10 बजे।

पात्र - साहिल,बेला और दुकानदार। (स्कूल की वर्दी पहने 10-11 साल के दो बच्चे। दुकानदार- 50 साल के आदमी,धोती और कुर्ता पहने हैं।)

दृश्य का विवरण - बेला और साहिल पैन में स्याही भरवाने केलिए दुकान के पास खडे हैं।

संवाद

दुकानदार - आओ बच्चे,क्या चाहिए?

बेला - अंकिल,एक पैन में स्याही भर दो।

दुकानदार - बेटी स्याही की बोतल अभी-अभी खाली हो गई है। अब तो कल ही मिल पाएगी।

बेला - (उदास से) आज यह कैसे लिखेगा? इसने तो पैन में बची स्याही को भी जमीन पर छिडक दिया।

दुकानदार - बेटा,बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए। अच्छा कौन-सी कक्षा में पढते हो?

साहिल - (बुरे मन से) पाँचवीं में।

दुकानदार - दोनों?

बेला - (खुशी से) हाँ अंकिल,हम दोनों सेक्शन 'ए' में पढते हैं। स्कूल का समय हो गया अंकिल,हम चलते हैं।

दुकानदार - तो कल आओ बच्चे। स्याही मिलेगी।

बेला - ठीक है अंकिल।

(दोनों बच्चे निराश होकर दुकान से बाहर आते हैं।)

32. पटकथा-3 (गाँधी चौक के लंगडी टाँग खेल)

स्थान - स्कूल का मैदान।

समय - सुबह 10 बजे।

पात्र - साहिल और बेला (दोनों 10-11 साल के, स्कूल की वर्दी पहने हैं।)

दृश्य का विवरण - दीपावली की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला तो बेला के सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी। यह देखकर साहिल उसके पास आता है।

संवाद

साहिल - (परेशान होकर) तेरे सिर पर यह क्या हो गया बेला?

बेला - (हँसकर) छत से गिर जाने से चोट लग गयी।

साहिल - यह कब हुआ?

बेला - बहुत दिन हो गए।

साहिल - अब दर्द है क्या?

बेला - नहीं। आज खेल घंटी में हम गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलेंगे।

साहिल - नहीं खेलेंगे।तेरे सिर में फिर से चोट लग जाएगी तो....?

बेला - (जिद करते हुए) नहीं लगेगी।

साहिल - तो ठीक है। अपनी मर्जी।

(दोनों खुशी से कक्षा में जाकर बैठते हैं।)

33. ***पटकथा-4 (पाँचवीं कक्षा के रिजल्ट आने पर)***

स्थान - फुलेरा कस्बे की एक गली।

समय - सुबह 11 बजे।

पात्र - साहिल और बेला(दोनों 10-11 साल के,कुर्ता और पतलून पहने हैं।)

दृश्य का विवरण - दोनों पाँचवीं कक्षा के रिजल्ट जानने के बाद दुखी मन से गली की एक पेड के नीचे खडे हैं।

संवाद

साहिल - बेला,तुमने हमारा रिजल्ट देखा?

बेला - हाँ देखा। हम दोनों पाँचवीं पास हो गए। अगले साल तुम कहाँ पढोगे?

साहिल - मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे। घर से दूर वहाँ एक हॉस्टल में अकेला रहकर पढूँगा। और तुम कहाँ पढोगी बेला?

बेला - मेरे पापा मुझे अगले साल राजकीय कन्या पाठशाला में पढाएँगे। क्या अब तुम फुलेरा में ही नहीं रहोगे?

साहिल - नहीं। तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड दिखाना। तुम्हारी आँखों में आँसू क्यों आ रहे हैं

बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता। अब तुम्हारी आँखों में भी आँसू क्यों?

साहिल - मुझे भी नहीं पता।

बेला - क्या अब मैं चिढाऊँ तुम्हें? रोनी सूरत साहिल.....।तुम दुखी मत हो,हम छुट्टी के दिनों मिला करेंगे।

साहिल - ठीक है बेला। फिर मिलेंगे।

(दोनों दुख भरे मन से अलग अलग रास्ते से चले जाते हैं।)

34. ***<u>गणित के माटसाब से हुए बुरे व्यवहार के बारे में बेला की डायरी</u>***

तारीख: .....

आज मुझे बहुत दुख का दिन था। गणित के माटसाब सुरेंदर जी मेरी कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर उन्होंने मेरे बालों मे पंजा फँसाया। लेकिन वह गलती न होने पर उन्होंने मुझे छोड दिया।मैं बहुत डर गयी। मेरे हाथ पैर काँप रहे थे। मुझे भयभीत होते देखकर साहिल भी बुरी तरह डर गया। माटसाब ने कॉपी मेरे बैठने की जगह पर फेंककर मुझे वहाँ जाकर बैठने को कहा। मुझे बहुत शरम आया। इसलिए मैं साहिल से नजर नहीं मिला पाई। क्या करूँ अगर कॉपी में गलती होती तो मेरी क्या हालत होती सोच भी नहीं सकती घर पहुँचने पर भी मेरा मन दुख से भरा था। आज का यह बुरा दिन मैं जिंदगी भर याद रखूँगी।

35. ***रपट (बेला के साथ माटसाब का व्यवहार)***

छोटी लडकी के साथ माटसाब की क्रूरता

स्थानः .....

फुलेरा गाँव के स्कूल की पाँचवीं कक्षा में पढती बेला नामक दस साल की लडकी के साथ गणित के माटसाब सुरेंदर जी ने ऐसी क्रूरता की। कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर माटसाब ने बेला के बालों मे पंजा फँसाकर उसे फेंकने लगा। लेकिन सच में वह गलती न होने से उसे छोड दिया। उसे एक अच्छी लडकी माननेवाले अपने मित्रों के सामने हुए यह अपमान वह सह न सकती थी। छोटे बच्चों के साथ ऐसा क्रूर व्यवहार एक अध्यापक केलिए लायक नहीं। कहा जाता है कि पूरे स्कूल के छात्र उनसे डरते हैं। कॉपी में जरा- सी गलती होने पर बच्चों को इधर उधर फेंक देना या झापड मारना उनकी आदत थी। बेला के पिता ने पुलिस थाने में शिकायत दर्ज की है।

36. *घर पहुँचने पर माटसाब के व्यवहार के बारे में बेला और माँ के बीच हुए वार्तालाप*

माँ - क्या हुआ बेटी,बहुत परेशान दिखती हो?

बेला - क्या कहूँ माँ,आज स्कूल में एक घटना हुई।

माँ - किसीके साथ झगडा हुआ होगा

बेला - नहीं। गणित के माटसाब ने मेरे बालों में पंजा फँसाया।

माँ - सुरेंदर जी! तुमने जरूर कोई गलती की होगी।

बेला - नहीं माँ। मैंने जो लिखा था वह ठीक ही था।

माँ - छोड दो। मास्टर जी है न?

बेला - लेकिन साहिल के सामने वह अपमान मैं सह न सकी।

माँ - कोई बात नहीं । वह तुम्हें अच्छी तरह समझता है।

37. *चरित्र चित्रण- गणित के माटसाब सुरेंदर जी का*

सुरेदर माटसाब बेला और साहिल के गणित अध्यापक थे। स्कूल के सभी बच्चे उनका नाम सुनने पर या दूर से देखने पर काँपना शुरू करते थे। इसलिए घंटी बजने के दो मिनट पहले ही अपने स्थान पर आकर बैठते थे। वे बीच बीच में गणित की कॉपी जाँचते थे। जरा सी गलती पर भी झापड मारना,बालों में पंजा फँसाना,कॉपी दूर फेंकना आदि उनकी बुरी आदतें थीं। भयभीत होकर छात्र क्लास में साँस पकडकर बैठते थे। छात्रों के अपमान करने में उनको तनिक भी हिचक नहीं थी। बच्चों की गलतियों को माफ करना उनकी बस की बात नहीं थी। बच्चे उनसे बिलकुल प्यार नहीं करते थे।

38. *क्लास में हुए बुरे अनुभव का जिक्र करते हुए सहेली के नाम बेला का पत्र*

स्थानः .....

तारीखः .....

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ।

आज स्कूल में एक घटना हुई। तीसरी पिरीयड गणित का था। गणित के माटसाब का नाम सुनते ही हम काँप जाते थे। आज वे मेरी कॉपी जाँच रहे थे। तभी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया। लेकिन कॉपी में कोई गलती नहीं थी। उन्होंने मुझे छोड दिया। मैं डर से काँप रही थी। उन्होंने कॉपी मेरी सीट पर फेंक दी। फिर अपनी जगह पर बैठने का आदेश दिया। तुम जानती हो,वे कितने क्रूर हैं उनकी क्लास हमें बहुत भयानक लगता है।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है? वहाँ तुम्हें सुरेंदर जी जैसा कोई अध्यापक है क्या? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा दोस्त

सेवा में, [हस्ताक्षर]

नाम नाम

पता

39. **<u>वार्तालाप (अस्पताल में,साहिल और बेला के बीच)</u>**

बेला - क्या हुआ साहिल?

साहिल - मेरी पिंडली में चोट लग गई है।

बेला - कैसे?

साहिल - स्टूल पर चढकर नीम की डाली पकडकर झूलते वक्त स्टूल टूटने से एक कील मेरी पिंडली में लग गई।

बेला - डॉक्टर ने क्या कहा?

साहिल - उन्होंने कहा घबराने की कोई बात नहीं। कुछ दिनों के बाद पट्टी खोलेंगे।

बेला - दर्द ज्यादा है क्या?

साहिल - अब दर्द कुछ कम हुआ है।

बेला - अच्छा मैं जाती हूँ, नर्स बुला रही है।बाई।

साहिल - ठीक है बेला,बाई।

40. **<u>टिप्पणी- साहिल और बेला की दोस्ती</u>**

साहिल और बेला दोनों पाँचवीं कक्षा में पढनेवाले दो छात्र हैं। दोनों अच्छे मित्र हैं। वे एकसाथ स्कूल जाले हैं और रास्ते में बीरबहूटियों को खोजता हैं। कक्षा में है तो साहिल जो करता है वही बेला भी करती है। पाँचवीं का रिजल्ट आया तो छठी कक्षा में दोनों अलग अलग स्कूलों में पढने की बात सुनकर बहुत दुखी भी होते हैं।

41. <u>दीपावली की छुट्टियों के बाद सिर पर पट्टी बाँधी बेला के साथ गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलने के बारे में साहिल की डायरी</u>

तारीख: .....

दीपावली की छुट्टियों के बाद आज स्कूल खुला। मैं सबेरे ही स्कूल गया। थोडी देर बाद बेला आई। उसके सिर पर सफेद बाँधी थी। बच्चे उसकी हँसी उठाने लगे। मैं उसके पास गया। वह छत से गिर गयी थी। बहुत दिन हो गए थे। देखकर बडा दुख हुआ। बाद में वह हमारे साथ गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेली। मैं परेशान था,यदि उसके सिर परफिर से चोट लगी तो....। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। पूरी खेल घंटी हम लंगडी टाँग खेलते रहे।

42. <u>बेला की डायरी (रिजल्ट दिवस की)</u>

तारीख: .....

आज पाँचवीं कक्षा के रिजल्ट का दिन था। मैं और साहिल पास हो गए। मैं बहुत खुश हूँ...साथ साथ दुखी भी। क्योंकि मैं कल से साहिल से मिल नहीं पाएगी। अगले साल वह अजमेर जाएगा। उसे घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा। आज तक कितनी खुशी थी। बारिश के मौसम में साहिल के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने बिताए। कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ? जाते समय उसकी आँखें लाल थीं और उसमें पानी भर गया था। मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है। क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी।

43. <u>रिजल्ट जानकर घर आने पर साहिल और माँ के बीच हुए वार्तालाप</u>

माँ - क्या हुआ बेटा? बहुत परेशान दिखते हो।

साहिल - बेला आगे मेरे साथ नहीं होगी न?

माँ - नहीं बेटा। अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी।

साहिल - मैं अजमेर में। ऐसा है न माँ?

माँ - हाँ बेटा। तुम्हारे पिता ने कहा था।

साहिल - बेला के बिना मैं कैसे रहूँ माँ?

माँ - बेटा, बेला जैसे दोस्त तुम्हें वहाँ भी मिलेगा।

साहिल - मुझे नहीं लगता। क्या बेला मुझे भूलेगा?

माँ - अच्छी दोस्ती दोस्ती कभी नहीं छूटेगा बेटा।

साहिल - ठीक है माँ।

44. <u>अजमेर में भर्ती होने के बाद बेला के नाम साहिल का पत्र</u>

स्थान: .....

तारीख: .....

प्रिय बेला,

तुम कैसी हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,मेरे नए स्कूल के बारे में बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ।

अजमेर का मेरा नया स्कूल फुलेरा के स्कूल से बिलकुल अलग है। होस्टल स्कूल के पास ही है। स्कूल में अब मुझे कई नए दोस्त हैं। हम एकसाथ स्कूल जाते हैं और पढते हैं। कभी कभी मुझे तुम्हारी और फुलेरा के स्कूल की यादें आती हैं।तुम्हारा नया स्कूल कैसा है? पढाई कैसे हो रही है? कोई नया दोस्त मिला क्या? गणित के माटसाब सुरेंदर जी जैसा नहीं है न?

वहाँ की तुम्हारी खबर विशद रूप से लिखना। अगली छुट्टी में हम मिलें। तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा दोस्त

[हस्ताक्षर]

नाम

सेवा में,

नाम

पता

PREPAIRED BY
SREEJITH.R
KOVOOR
LFEMHSS, EDAVA